UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 14 भविष्य का भय (मंजरी)

महत्वपूर्ण गद्यांश की व्याख्या

पर माँ इस भयंकर ..... नहीं करना।

संदर्भ:
प्रस्तुत गद्य खण्ड हमारी पाठ्यपुस्तक 'मंजरी' के 'भविष्य का भय' नामक पाठ से लिया गया है। इसकी लेखिका आशापूर्णा देवी हैं।

प्रसंग:
प्रस्तुत कहानी में साधन सम्पन्न परिवार की एक लड़की के माध्यम से लेखिका द्वारा निर्धन और असहाय बच्चों के प्रति संवेदना जागृत करने की चेष्टा की गई है।

व्याख्या:
तुलतुल अपने माता-पिता को छोटे बच्चों से काम कराने के कारण उन्हें पापी कहती है। माँ ने इस भयंकर सत्य को सुनकर उससे हँसकर कहा कि वह इस पापी संसार में पैदा हुई हैं और इस कारण पापी बनकर जीवन गुजारना पड़ रहा है। वह नए सिरे से संसार को नहीं बदल सकती है। वह अपनी लड़की को बड़े होकर अपने मित्रों के साथ मिलकर नया संसार. बनाकर इसको पापमुक्त करने को कहती हैं।

पाठ का सर (सारांश)

अन्तरराष्ट्रीय बाल वर्ष में तुलतुल ने छोटी टुनी की माँ से कहा कि यह साल छोटे लड़के-लड़कियों का है। उनकी ज्यादा देखभाल करनी होगी। टुनी की माँ ने टुनी से जल्दी-जल्दी बरतन धोने को कहा। तुलतुल ने टुनी को खबरदार किया क्योंकि उसकी माँ खाक नहीं समझी। तुलतुल की मिस ने कहा है- दुनिया में सभी आदमी बराबर है। सभी छोटे बच्चों को प्यार पाने और देखभाल किए जाने का अधिकार है। "तुलतुल नहीं समझ पा रही थी कि दुबली-पतली टुनी ठण्डे पानी से बरतन धोए और तुलतुल गर्म पानी से मुँह धोकर गरम कपड़े पहनकर गरम-गरम पूरियाँ खाए।
टुनी को काम करते देख तुलतुल ने उसके हाथ से कोयला तोड़ने का लोहे का हथौडा छीन लिया और बोली, "कल से टुनी यह गन्दा काम नहीं करेगी। कल पापा टुनी को स्कूल में दाखिल करवा देंगे। पापा ने टुनी को दाखिल करवाने की बात कही और बताया कि स्कूल में फीस नहीं लगती, कॉपी-किताब मुफ्त मिलते हैं और टिफिन में खाना भी मुफ्त। तुलतुल यह सुनकर खुश हो गई।
दूसरे दिन तुलतुल ने कपड़े देकर टुनी को पहनने का हुक्म दिया और बोली, "पापा के बाजार से लौटने पर स्कूल जाएँगे। समझी, और उसके पहले मेरे साथ खाना खाएगी। याद रहेगा? खाते समय तुलतुल ने चिल्लाकर टुनी को पुकारा। दादी ने बताया कि टुनी की माँ बरतन छोड़कर टुनी को लेकर घर पूछने गई है। शाम को तुलतुल को यह सुनना पड़ा कि टुनी की माँ ने तुलतुल की हरकतों से तंग आकर काम छोड़ दिया है।
एक बार तुलतुल जलपाईगुड़ी नाना के यहाँ गई थी। नाना द्वारा दी गई 'दया के सागर, विद्यासागर नामक पुस्तक से प्राप्त शिक्षा ग्रहण करते हुए तुलतुल ने एक गरीब लड़के को शीत से बचाने के लिए अपना कीमती कार्डिगन दे दिया था, क्योंकि विद्यासागर भी अपने शरीर से उतारकर कपड़े गरीबों को देते थे। नाना ने तुलतुल को डाँटा था। तुलतुल समझ नहीं पा रही थी कि बड़े लोग बोलते कुछ हैं और करते कुछ हैं। उनके काम बड़े उलटे किस्म के हैं।

https://www.evidyarthi.in/

तुलतुल को भैया ने खाना खाने बुलाया। उसने मना कर दिया। पापा ने उससे पूछा कि टुनी स्कूल जाएगी तो उसकी माँ का गुजारा कैसे होगा। तुलतुल झटककर बोली, “छोटे बच्चों से काम कराना बड़ा पाप है तुम सब पापी हो।” माँ ने समझाया कि जब बड़ी हो जाए तो वह और उसके दोस्त मिलकर ऐसा पाप न करें।. तुलतुल माँ से लिपटकर रोकर बोली, “ अगर बड़ी होकर मैं तुम जैसी हो जाऊँ और भूल जाऊँ कि सभी लोग एक समान हैं।”

https://www.evidyarthi.in/